आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024
Received: 4/09/2024; Accepted: 15/09/2024; Published: 26/09/2024

भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में नियतिवाद

- डॉ. विनयकुमार चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, तुलजापुर
जि. धाराशिव-महाराष्ट्र
drvinays71@gmail.com
9423342418

डॉ. विनयकुमार चौधरी, **भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में नियतिवाद**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024,(202-207)

उपन्यास को आधुनिक काल के हिंदी गद्य की सर्वाधिक सशक्त लोकप्रिय विधा कहा जाता है। साहित्य के इस माध्यम में जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति के उजागर होने से इसमें हमें समाज की सच्ची तस्वीर देखने को मिलती है। समाज जीवन के विविध स्पंदनों का, अनुभूतियों एवं विचारों का, समस्या एवं चिंतन का इस माध्यम द्वारा हम हू-बहू साक्षात्कार कर सकते हैं। गद्य की इस विधा में हम भारतीय जन-जीवन को प्रतिबिंबित देख सकते हैं। यह ऐसी लचीली सर्वमुख और बहुसमावेशक साहित्य विधा है, जिसमें मानव जीवन की अनुभूतियो और जटिल भावनाओं को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें कल्पना की उड़ान, सृजन की गतिशीलता और विकास तथा जीवन के अनिर्बंध प्रवाह का एक साथ दर्शन होता है।

पद्मभूषण श्री. भगवतीचरण वर्मा (30 अगस्त 1903 - 05 अक्तूबर 1981) हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार है। वे प्रेमचंदोत्तर युग के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न कलाकार होने से उन्हें प्रेमचंद का संशोधित संस्करण भी कहा जाता है। उनके उपन्यासों में सर्वत्र युग भावना के स्पंदन और क्रंदन का स्वर सुनाई पडता है। वर्मा जी ने एक मनीषी की भाँति सतत चिंतन किया, इतिहास का कोना-कोना झाँका पुरातत्वों की खोज की मानवता के हित के लिए किये गए इस अथक प्रयास के द्वारा अपने चेतना के सागर से ऐसे मणियों को अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है, जिनकी प्रभा में वर्तमान पीढी को दिशा बोध प्राप्त होता है।

आपके 17 उपन्यासों में निहित सामाजिक उद्देश और पुष्ट कथानक, सत्य, शिव एवं सुंदर अनुप्रणित आपका व्यक्तित्व पूर्णरूप से जीवन और जगत की यथार्थ परक चेतना से समन्वित ही नियति और नियंता का स्वरूप ही आपकी दार्शनिक भूमिका है।

भारत वर्ष में प्राचीन काल से ही उपनिषद, रामायण आदि ग्रंथों में नियतिवाद पर चिंतन हुआ है। इसमें नियति की शक्ति को अजय कहा गया है। 'नियति' शब्द की कई अंगों से चिंतन किया गया है, नियति शब्द 'नियत' धातु से बना है। नियत का अर्थ-नियम, प्रथा आदि के अनुसार किया हुआ, ठहराया हुआ, आज्ञा द्वारा स्थिर किया हुआ, नियुक्त, नियोजित आदि' तथा 'नियति' शब्द का अर्थ है " नियत होने की क्रिया या भाव, होनी, अदृश्य, भाग्य, दैव, प्रारब्ध, विधि, निश्चित पद्धति, पूर्वकृत कर्म का निश्चित परिणाम, अवश्य होनेवाली घटना आदि उत्पत्ति की दृष्टि से 'नियम्यते आत्मा अनेनेति नियतिः"[1] अर्थात आत्मा की नियामिका शक्ति 'नियति' है।' काव्य प्रकाश' के रचियता आचार्य मम्मट ने वाणी की वंदना करते हुए 'नियति' शब्द को इसी अर्थ में व्यवहृत किया है। इस तरह स्पष्ट है कि समष्टिगत नियम ही 'नियति' है।

प्रवृत्तिगत अर्थ को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि 'नियति' शब्द का प्रयोग" भाग्य, दैव, अदृश्य, भागधेय, भवितव्यता।"[2] "विधि, दैष्टिकता, कर्म, प्रारब्ध और ईश्वरेच्छा के पर्याय के रूप में भी होता रहा है।"[3] भारतीय संस्कृति के अक्षय भंडार 'रामायण में आदि कवि वाल्मिकी की पावन पुनित वाणी 'नियति'का स्तुति-गान इन शब्दों में कर उठती है - "नियतिः कारनं लोके नियतिः कर्मसाधनम नियति सर्वभूतानां नियोगोष्वह कारणम्॥"[4] नियति ही संसार में कारण है, नियति ही कर्मों का साधन है और नियति ही समस्त प्राणियों को कार्यरत करने में प्रेरक है।

नियतिवाद की परिभाषा:

नियतिवाद को शब्दों में बांधने से शायद शब्दों की ताकत ओछी पड जाएगी। क्योंकि व्यक्ति और विषयानुरूप वह परिवर्तनीय है। फिर भी उसे सामान्यतः निम्न तरह से स्पष्ट किया जा सकता है। मराठी विश्वकोश में- "नियतिवाद याने वह सिद्धांत जो होता है वह नियत होता है वह समग्र परिस्थितियों में घटीत होता है, वह अटल और अनिवार्य है। इसीलिए उन् समग्र परिस्थितियों में जो घटित हुआ है उससे कुछ और होना असंभव है।"[5] इस परिभाषा के अंतर्गत मनुष्य को गौण स्थान दिया है। वह सिर्फ माध्यम है, घटनाओं और कार्य के लिए जिम्मेदार नहीं। बहरहाल मनुष्य पर दैवी कृपा होती है। उसके अनुसार ही उसके समस्त कार्य का संचालन होता है। मानवेत्तर शक्ति के सामने मनुष्य की विवशता का स्वीकार उनके मूल में है। डॉ. रामगोपाल शर्मा के शब्दो में-" विभिन्न प्रकार के नियति विश्वासों ने अधिकांश जातियों धार्मिक विश्वासों ने सर्वोपरी स्थान ग्रहण किया है। एवं शासन तथा ईश्वर की सत्ता के भी ऊपर अपना अंकुश लगाया है।"[6] प्राचीन काल से मनुष्य स्वयं को सृष्टि का केंद्र बिंदू मानता रहा है। लेकिन वह अनुभव करता है कि सृष्टि में घटित कई घटनाओं पर उसका अंकुश नहीं है।

भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में नियतिवादः

भगवतीचरण वर्मा नियतिवादी दर्शन का समर्थन करते हुए उसे एक स्वस्थ दृष्टिकोण मानते हैं " नियतिवाद का दृष्टिकोण एक स्वस्थ दृष्टिकोण है-मेरा ऐसा विश्वास है जो मेरे निजी अनुभवों द्वारा प्राप्त है। और अपने अनुभवों द्वारा इस विश्वास को प्राप्त करने के कारण मुझमें इतना साहस है कि मैं अपनी बात को बिना किसी संकोच से कह सकूं।"[7] वर्मा जी की यह विचारधारा उनके व्यक्तित्व में ही व्याप्त है। उन्हें जन्मजात गुणों के रूप में प्राप्त है। किसी की नकल नहीं; अनुभव से प्राप्त है। जो परिस्थितियों से विकसित है। इस प्रतिभा का और पाश्चात्य नियतिवादी धारा में अंतर करते हुए वे लिखते है।" नियतिवादी दर्शन के अंतर्गत अपने को कर्ता समझनेवाला मनुष्य स्वयं भयानक रूप से विवश है। वह स्वयं अपनी इच्छा से कोई काम नहीं कर सकता। कार्य और कार्यों के नियमों से जकड़ा हुआ और संचलित वह कर्म करता जाता है।"[8] वर्मा जी भाग्यवाद की परंपरागत मान्यता को ठुकरा देते है क्योंकि इसके अंतर्गत अंधविश्वास भरा होता है। वर्मा जी अंधविश्वास की जगह आत्मविश्वास पर भरोसा रखते हैं।

भगवती बाबू ने नियतिवादी मुद्दों पर अपने उपन्यासो में विचार किया है। उनके पात्र मानव जीवन की सभी गतिविधियाँ शासित है। मानव जीवन के क्रिया-कलाप, उतार-चढाव की व्याख्या, नियतिवाद की दृष्टि से ही करते हैं। वर्मा जी के अनुसार सभी कुछ कार्य कारण शृंखला के अनुसार चलता है। उसमें मनुष्य के इच्छा-अनिच्छा का कोई संबंध नहीं वह केवल निमित्त है। वे 'प्रश्न और मरीचिका" में लिखते हैं-"कर्ता कोई और है, हम सब तो निमित्त मात्र है, न मनुष्य अपनी इच्छा से जन्म लेता है, न अपनी इच्छा से मरता है, ऊपर से कार्य और कारण एक दूसरे से बुरी तौर से संबंद्ध दिखते है, लेकिन कार्य और कारण की लंबी शृंखला को देख पाना हमारे वश में नहीं है।"[9] वर्मा जी ने कार्य और कारण की शृंखला की स्वीकारोक्ति धुप्पल, रेखा, सामर्थ्य और सीमा, प्रश्न और मरीचिका, चाणक्य आदि उपन्यासों में दी है। उनमें उनका मानना है कि कभी-कभी कुछ ऐसा होता है कि, उसके पीछे छिपे कारण को समझना कठिन हो जाता है-" नियति की एक अपनी गति है, उसका अपना ही एक क्रम है जिसे कोई नहीं जानता। जान भी नहीं सकता।"[10]

वर्मा जी के अनुसार मनुष्य का अस्तित्व कुछ भी नहीं है। वह साधन मात्र है। उसी को वे नियति की संज्ञा देते हुए कहते हैं - "जीवन के क्रम को नियति की संज्ञा दी जा सकती है। जहाँ मनुष्य कर्ता न होकर साधन मात्र है। कर्ता तो स्वयं नियति को कहा जा सकता है।"[11] इसे ही वे धुप्पल भी कहते है- "मनुष्य अपना कर्म जान-बुझकर नहीं करता वह उससे हो जाया करता है। कर्ता तो कोई और है मैं उसे नियति कहूं या शुध्द रूप से धुप्पल कहू एक ही बात है। नियति कहने के बाद मै फिर दार्शनिक उलझनों में पड जाऊंगा और इसके लिए मै तैयार नहीं होता इसे धुप्पल कहकर अपने वर्तमान से उलझ जाता हूँ।"[12] इतना ही नहीं मनुष्य कठपुतली है। वह किसी गुमनाम शक्ति द्वारा नचाया जा सकता है। यही वर्मा जी का नियतिवाद है। "नियति सब कुछ कराती है। इंसान के किये-धरे कुछ नहीं होता। वह किसी अदृश्य शक्ति के हाथों कठपुतली की तरह नचाया जाता है।"[13]

नियति के संदर्भ में वर्मा जी का दृष्टिकोन 'पतन' उपन्यास में बना था। वह 'चित्रलेखा' में स्पष्ट अभिव्यक्त हुआ है। और वही विकसित होकर 'सामर्थ्य और सीमा' में मनुष्य का सामर्थ्य और सीमा पर प्रश्नचिन्ह लगाकर यह सिध्द करते हुए चित्रित हुआ । मानव की शक्ति एवं सामर्थ्य शक्ति के सामने कुछ भी नहीं है। मानकुमारी कहती है-" सब में अहं का अभिमान था, अपनी शक्ति पर विश्वास था, लेकिन किसी में क्षमता नहीं है। और वे सब अपनी विवशताओं और सीमाओं में जकडे हुए चले गए।"[14]

चित्रलेखा बीजगुप्त पर अपना सारा जीवन न्योछावर करती है। फिर भी वह स्वयं की इच्छा के विपरीत कुमारगिरि की ओर आकृष्ट होती है। चित्रलेखा को दीक्षा देने से इनकार करने के बाद भी कुमारगिरि चित्रलेखा के माध्यम से साधना से चुत होता है। ठीक इसी तरह बीजगुप्त चित्रलेखा के प्रेम में डूब जाता है। पर वह यह नहीं समझ पाता कि वह यशोधरा के प्रति किस प्रकार आकृष्ट होता है। बाद में उसके विचार में फिर मोड आता है और श्वेतांक से यशोधरा का विवाह करवाकर खुद भीखारी बन जाता है। इस उपन्यास का प्रत्येक पात्र सामंत होते हुए भी पराजित है। वह परिस्थितियों का दास है। मृत्युंजय कहते भी है -. "परिस्थिति चक्र का एक अभागा शिकार, पर साथ ही मनुष्यता से पूर्ण मनुष्य ।"[15]

नियति, दुःख, निराशा, उदासिनता और निष्क्रियता को जन्म देती है। वह मनुष्य को असमर्थ और विवश करती है। विश्व के बहुत से मनुष्य नियति के सत्ता में विश्वास करते हैं। वह अदृष्ट है जिसका अर्थ- जो दिखाई न पड़े, अगोचर है, निर्विकल्प, ज्ञानातित है, सिर्फ उसका अनुभव किया जा सकता है। वह ऐसी क्रूर शक्ति है, नृशंस है जिनके हाथों मनुष्य कठपुतली की भाँति नाचता है। वह शक्ति कभी प्रकृति के शक्ति के रूप में और कभी भाग्य के उतार-चढाव के रूप में मानव की समस्त गतिविधि पर आघात कर के उसे विवश बनाती है।" "मनुष्य से अलग हटकर कोई विधान है, अनजाना, अदृश्य । वही विधान सब कुछ संचालित कर रहा है।"[16] थके पांव का केशवचंद्र हर कदम यह अनुभव करता दृष्टि- गोचर होता है-" बहुत सी बातें ऐसी होती है, जिनपर मनुष्य का बस नहीं चलता। क्योंकि सब कुछ विधि के हाथ में है।"[17] 'टेढे-मेढे रास्ते का रामनाथ तिवारी सक्षम और सबल पात्र है। जो अहम से भरा हुआ है वह अपने परिवार तथा संपर्क में आनेवालों को तोडकर रख देता है। अंत में वह भी खिलौनों के भाँति नियति के सामने झुकता है।" बचाना और मारना यह हमारे हाथ में नहीं, जरा भी नहीं है। यह सब उस अदृश्य के हाथ में है।"[18] 'भुले बिसरे चित्र' में ज्वालाप्रसाद तथा गजराजसिंह की कथा भी नियतिवादी है। बाबू ज्वालाप्रसाद गजराजसिंह को सूचना देते है कि, प्रभूदयाल, बरजोरसिंह की जमीन पर कल कब्जा करेगा। "ज्वाला बाबू जो होना था वह हो गया। जो कुछ आगे होनेवाला है वह अपने बस की बात नहीं है, उसे कोई रोक नहीं सकता.... । हुयी है वही जो राम रचि राखा..."[19] 'पतन' उपन्यास में नवाब वाजिद अलिशाह कहते है-" "ऊपर खुदा है उसकी मर्जी हमेशा पूरी होगी, फिर मैं यह सब क्यों करूं? वह जो कुछ करना चाहता है, वह टल नहीं सकता। फिर मैं यह सब क्यों करू?"[२०] 'अपने खिलौने' उपन्यास में कैराकोमल

अपने प्रेमी विरेश्वर प्रतापसिंह से कहती है "मेरे अराध्य ! सोचना-विचारणा बेकार है, क्योंकि सोचा-विचारा होता कब है?[21]

निष्कर्ष के रूप में कहें तो भगवती बाबू सत्रह उपन्यासों के धनी है, करीबन सभी उपन्यासों में नियतिवाद की झलक दिखाई देती है।उनका नियतिवाद भारतीय दर्शन के अनुसार ही है। भारत में ब्रम्हा को सृष्टि का निर्माता, विष्णु को पालनहार तथा महेश को विनाश का प्रतीक माना जाता है, और यह नियति है। नियतिवाद में कर्मरत रहने की प्रेरणा'गीता' के अनुसार ही है। जिसके कारण मनुष्य में अकर्मण्यता प्रवेशित नहीं होती। यह वर्माजी के नियतिवाद में नाविण्य है।

संदर्भ सूची :

1) बहादुर राधाकांतदेव(1961)शब्द कल्पद्रुम-खंड 02, (पृ.सं.-886) इलाहाबाद,रायसाहब रामदयाल अगरवाला.
2) तुलसीदास(2000)रामचरितमानस,बालकांड, (पृ.सं.165)गोरखपुर, गीता प्रेस.
3) वर्मा धीरेंद्र(सं.2015)हिंदी साहित्यकोश (पृ.सं.540) वाराणसी,ज्ञानमंडल.
4) वाल्मिकी(1914)वाल्मिकी रामायण,किष्किंधा कांड,(पृ.सं.254)मुंबई, गुजराती प्रिंटिंग प्रेस.
5) संपा.जोशी लक्ष्मणशास्त्री(1979) मराठी विश्वकोश,खंड-08(पृ.सं.666)मुंबई,महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृती मंडल.
6) शर्मा रामगोपाल(1989)हिंदी काव्य में नियतिवाद (पृ.सं.5) दिल्ली, वाणी प्रकाशन.
7) वर्मा भगवतीचरण(1950)रंगों से मोह(प्रस्तावना) (पृ.सं10) दिल्ली,राजकमल.
8) वही – (पृ.सं.11)
9) वर्मा भगवतीचरण(1973)प्रश्न और मरीचिका (पृ.सं.517) दिल्ली, राजकमल.
10)वर्मा भगवतीचरण(2003)रेखा(पृ.सं.314) दिल्ली,राजकमल.
11)वर्मा भगवतीचरण(2003)चाणक्य(पृ.सं.31) दिल्ली,राजकमल.
12)वर्मा भगवतीचरण(2004)धुप्पल (पृ.सं.44)दिल्ली, राजकमल.
13)वर्मा भगवतीचरण(2003) सबहिं नचावत राम गोसाई(पृ.सं.160)दिल्ली,राजकमल.
14)वर्मा भगवतीचरण(2001)सामर्थ्य और सीमा (पृ.सं.342)दिल्ली,राजकमल.
15)वर्मा भगवतीचरण(1988)चित्रलेखा(पृ.सं.79) इलाहाबाद, भारती भंडार.
16)वर्मा भगवतीचरण(1968)सीधी सच्ची बातें (पृ.सं.282)दिल्ली, राजकमल.

17)वर्मा भगवतीचरण(1963)थके पांव(पृ.सं.63) देहरादुन,साहित्य सदन.

18)वर्मा भगवतीचरण(1946)टेढे मेढे रास्ते(पृ. सं.394) इलाहाबाद, भारती भंडार.

19)वर्मा भगवतीचरण(1998)भूले बिसरे चित्र (पृ.सं.57) दिल्ली, राजकमल.

20)वर्मा भगवतीचरण(1928)पतन(पृ.सं.38) इलाहाबाद, भारती भंडार.

21)वर्मा भगवतीचरण(1957)अपने खिलौने(पृ.सं.113)इलाहाबाद, भारती भंडार.

****